RNI No MAHHIN/2015/65212 https://shreedeshna.page shreedeshna77@gmail.com

मासिक पत्रिका

श्री देशना

सांस्कृतिक चेतना की संवाहिका...

वर्ष : ७ अंक : ६ शुल्क २०/

प्रधान-सम्पादिका : डॉ.नीलम जैन 89993 99481

पुणे जनवरी 2022

संपादिका : डॉ. ममता जैन 9970790398

सम्पादकीय

जनवरी में पूर्ण वर्ष के लिए नवीन ऊर्जा संचित करना है

'उठो, जागो और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ो', जनवरी माह यही आह्वान करता है। जनवरी में जन्म लेकर जीवन को वरेण्य बनाने वाले युवा शक्ति के भारतीय संस्कृति के प्रणम्य आदर्श स्वामी विवेकानन्द जी का जन्मदिवस देश के युवाओं को उद्ग्रीव देख रहा है। सीमित संसाधनों में असीमित उपलब्धि अर्जित करने वाले, शतावधानी, दृढ़संकल्पी, संस्कृति के पुरोधा, राष्ट्र को अन्तराष्ट्रीय क्षितिज पर गौरवमयी प्रतिष्ठा प्रदान कराने वाले विवेकानंद जी ने नैतिकता, सदाचार एवं आत्मबल के प्रखर प्रकाश से विश्व को आलेकित किया था। उन्होंने चेतना में चिन्तन के द्वारा नव प्राण ऊर्जा स्पन्दित की थी। उनके शब्दों की गूंज, अनुगूंज प्रार्थना की भांति विस्तारित थी।

महापुरुषों ने नैतिकता के प्रखर प्रकाश में अपने यौवन, अपने सम्पूर्ण जीवन, अपनी आत्मा को प्रकाशित किया है। क्षण-प्रतिक्षण जीवनप्रवाह के साथ गतिशील रहे हैं और अपनी चेतना में चिन्तन द्वारा नित नवीन ऊर्जा स्पन्तिदत करने का प्रयास किया है। भौतिक भव्यता से ग्रस्त न होकर अपनी गहन प्रज्ञा, अध्ययन, अनुभव को व्यापक करते हुए अपने कृतित्व को समुन्नत किया है, इसीलिए उन्होंने अल्पवय में ही सहस्राब्दियों का कार्य कर दिया। दो हाथों से हजार हाथों का कार्य कर दिया तथा अपनी शक्तियों को पूर्ण विकसित कर एक संस्कारित स्वच्छ और आदर्श परम्परा भावी पीढ़ी को सौंप कर अपनी देह को आनन्द का कोष भी बनाया और मोक्ष का धाम भी।

जीवन में भुक्ति (भोग) मुक्ति (योग) का समुचित समन्वय ही समुचित समन्वय ही मनुष्य जीवन को सार्थक बनाता है। मनुष्य जन्म लेना ही मात्र पुण्य का प्रतिफल नहीं है। अपितु मनुष्य जन्म लेकर सत्कार्य करना ही महाभाग्य है। हमारा अर्जन विसर्जन युक्त हो, हमारे धन में परमार्थ भी हो, संग्रह भी हो, त्याग भी हो, हम धन-संपदा अर्जित करें, साथ ही उसके उपभोग के लिए पुण्य भी, तभी सम्पदा सुखदायी होती है, स्थिर रहती है, सद्कार्यों में लगती है।

हमारे जीवन का लक्ष्य जनवरी माह में यही होना चाहिए हम कैलेण्डर बदलें, संस्कृति नहीं।

-डॉ. नीलम जैन

अहिच्छत्र जैन धर्म की धरोहर

-अतुल मोहन मिश्र

आंवला के निकट जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थ रामनगर भी वर्तमान में बहुत लोकप्रिय है। जैनियों ने अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने में देश भर के उनके तीर्थंकरों से संबंधित सभी ध्वंसावशेषों को पुनर्स्थापित करने के जो प्रयास किये हैं, वे प्रशंसनीय हैं। अहिच्छत्रा से संबंधित सबसे अधिक कथायें जैन-साहित्य में ही मिलती हैं। कहा जाता है कि यहां पर जैनियों के तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने उपासना की थी। इसीलिए यहां पर जैनियों का एक बहुत बड़ा मंदिर मूल स्थान यानि किले से लगभग आधा किलोमीटर दूर पर स्थापित कर दिया है। यहां पर दूर-दूर से तीर्थयात्री आते हैं।

अहिच्छत्र के किले से भी उत्खनन में बहुत बड़ी संख्या में जैन-पुरावशेष धरती के गर्भ से निकलते रहते हैं। इन पुरावशेषों में पवित्र जैन-चिन्हों से अंकित मिट्टी के छापे, मूर्तियां और सिक्के निकलते रहते हैं। ये सभी खिलौने आसपास के गांव-गोटों से भी काफी संख्या में निकलते हैं। इनमें अजामुखी मृण्मूर्तियां अपनी विशेष बनावट के आधार पर पुरातत्त्ववेत्ताओं के विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने इन मृण्मूर्तियों को कुषाणकाल का माना है। अहिच्छत्र में पत्थर की विशाल जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां

अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी की पावन धरा के इतिहास में प्रथम बार
परम पूज्या जैन धर्म प्रभाविका आर्यिका रत्न 105 श्री सृष्टि भूषण माताजी के
मंगल आशीर्वाद एवं सानिध्य में आयोजित होने जा रहा है।
24वें तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी की अतिशयकारी धरा पर
भव्य 24 समव शरण की रचना के साथ
श्री 1008 समव शरण महामंडल विधान
एवं विश्व शांति महायज्ञ
दिनांक : 23 फरवरी 2022 से 28 फरवरी 2022 तक
पावन सानिध्य
परम पूज्यनीया आर्यिका 105
श्री सृष्टि भूषण माताजी ससंघ
श्री तृप्तिभूषण माताजी
निर्देशन
बा. ब्र. नेहा दीदी
मधुर संगीत
राम कुमार एण्ड पार्टी
भोपाल
• एक समवशरण बुक कराने हेतु न्यौछावर राशि 1,01,111/-
• सौधर्म इन्द्र 5,00,000/- • चक्रवर्ती 5,00,000/- • कुबेर इन्द्र 3,00,000/-
• महायज्ञ नायक 3,50,000/- • यज्ञ नायक 3,00,000/- • ईशान इन्द्र 3,00,000 /-
• सामान्य इन्द्र मंच पर स्थान 1,50,000/- • विधान में सामान्य इंद्र-इंद्राणी 2100/-
• ध्वजा रोहण 1,00,000/-
अन्य सहयोग-द्रव्य प्रदाता 2,51,000/- एक समय के भोजन की व्यवस्था 51,000/-
साड़ी हार मुकुट धोती, दुपट्टा, भोजन व्यवस्था आयोजन समिति की ओर से की जाएगी
आयोजक : श्री आदिनाथ सृष्टि धर्म प्रभावना समिति (रजि.)
निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज
श्री महावीरजी, जयपुर, गंगापुर सिटी, करौली, हिण्डौन, बयाना, सिंकदरा, खेड़ली, अलवर, लालसोट, सवाई माधोपुर, टोंक, निवाई, उनियारा, बांदीकुई, राजगढ़, कठूमर, भरतपुर, धौलपुर
सम्पर्क सूत्र : 9660403861, 9413924197, 9079957285

नए साल में मौन तोड़ने का हो संकल्प

निःसंदेह आध्यात्मिक दृष्टि से, स्वास्थ्य की दृष्टि से, शिष्टाचार, सम्मान और शांति आदि कई मायनों में मौन रहना एक अच्छे व्यक्तित्व की निशानी है। वह एक साधना भी है। मौन रहने के जितने भी लाभ गिनाए जायें उतने कम हैं। कहा गया है-

मौनं सर्वार्थसाधकम्

किन्तु हर समय मौन रहना भी हानिकारक है। खासकर तब जब सब कुछ लुट रहा हो ।

कहा भी है –

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।

कुछ प्रसंग ऐसे भी होते हैं जब सज्जनों को बिल्कुल चुप नहीं रहना चाहिये।

ग्यारहवीं शताब्दी के आचार्य शुभचंद्र लिखते हैं –

धर्मनाशे क्रियाध्वंसे स्वसिद्धान्तार्थविप्लवे।
अपृष्टैरपि वक्तव्यं तत्स्वरूपप्रकाशने।। –ज्ञानार्णव/५४५

अर्थात्– जब धर्म का नाश हो रहा हो, आगम सम्मत क्रिया नष्ट हो रही हो, आगम या सिद्धांत का गलत अर्थ लगाया जा रहा हो तब विद्वानों को बिना पूछे भी यथार्थ स्वरूप को बतलाने वाला व्याख्यान / कथन जरूर करना चाहिए ।

ऐसे वक्त पर उन्हें मौन बिल्कुल नहीं रहना चाहिए । इस समय का मौन एक किस्म का अपराध ही है। हमारा मौन उस अनर्थ का समर्थन बन जाता है। उक्ति प्रसिद्ध है –

'मौनं स्वीकृति-लक्षणम्' या 'मौनं सम्मतिदर्शनम्'

अर्थात्– मौन सहमति का सूचक होता है।

– प्रो अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली

वर्तमान में हम एक ऐसे दौर से गुज़र रहे हैं जहां असत्य और अनाचार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाले के साथ ऐसा वर्ताव होता है मानों वो कोई अपराधी हो। आज व्यक्तिवाद इतना अधिक हावी है कि असत्य का विरोध करो तो व्यक्ति अपना विरोध समझता है। गलत को गलत कहना भी अपराध बना दिया गया है। विपक्ष को स्थायी रूप से विरोधी मान लिया गया है। दूसरी तरफ अधिकांश बुद्धिजीवी भी स्वार्थी, अवसरवादी, लोभी और चाटुकार किस्म के हो गए हैं ।

हम अपनी सुरक्षा के प्रति ज्यादा चिंतित हैं, इसलिए स्व सुरक्षित लेखन, स्व सुरक्षित भाषण, स्व सुरक्षित मौन में ज्यादा यकीन रखने लगे हैं। हम अक्सर बहुत चतुराई से ऐसे मौकों पर भी तटस्थ हो जाते हैं जब हमें सत्य के साथ किसी भी कीमत पर खड़े होना चाहिए। खुद को सबकी नजर में भले बने रहने की आदत हम इस आधार पर विकसित करते हैं कि क्या पता कब किस सज्जन या दुर्जन से अपना काम पड़ जाए। कुछ बोलकर या किसी एक का पक्ष लेकर हम किसी के भी बुरे क्यों बनें ?

हम अक्सर मीटिंग या सभाओं में ऐसे वक्त पर भी मौन रहना ठीक मानते हैं जब मिथ्या सिद्धियां हो रहीं हों, स्वार्थी प्रस्ताव पारित हो रहे हों आदि आदि, वो भी सिर्फ इस भय से कि कुछ बोलेंगे या विरोध करेंगे तो मुझे ही लाभ या आमंत्रण मिलना बंद हो जाएंगे । पद मिलना बंद हो जायेंगे या इनाम मिलने की संभावना खत्म हो जाएगी आदि । पर यह कब तक चलेगा ?

रोशनी भी गर अंधरों से डरने लगेगी,
तो बोलो ये दुनिया कैसे चलेगी ?

एक कवि ने लिखा है –

जब चारों ओर मचा हो शोर सत्य के विरुद्ध, तब हमें बोलना ही चाहिए,

सर कटाना पड़े या न पड़े तैयारी तो उसकी होनी ही चाहिए।

दिनकर जी की यह पंक्तियां उनके ऊपर लिखी गयी हैं जो ऐसे वक्त में भी तटस्थ या चुप रहने में समझदारी समझते हैं –

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध।।

आप सभी को नए वर्ष की शुभकामनाओं के साथ –नए वर्ष में हम यह नया संकल्प लेंगे ।

हो सत्य का हनन तो जरूर बोलेंगे ।

अहिच्छत्र.... प्रथम पृष्ठ का शेष

कुषाण काल से लेकर गुप्तकाल तक तेजी से बनती रहीं। ऐसी कुछ मूर्तियों के अंश रामनगर के वर्तमान मंदिर में प्रदर्शित किये गये हैं।

यहीं के कई जैन धर्म में आस्था रखने वाले राजाओं के नाम भी जैन साहित्य में उपलब्ध हैं। संभवतः बौद्ध धर्म के साथ-साथ ही यह धर्म भी यहां पर विकसित होता रहा। इस धर्म को मानने वाले लोग सिर्फ अहिच्छत्रा में ही नहीं रहे, अपितु आसपास के गांवों में भी बड़ी संख्या में रहे होंगे।

चंदौसी के पास सरथल नामक गांव तो उत्तर गुप्तकाल में जैनियों का बहुत विशाल केंद्र रहा था। यहां पर पत्थर और मिट्टी के पुरावशेषों में से अधिकांश जैन धर्म के ही हैं। इनके आधार पर इस स्थान को एक बहुत बड़ा जैन तीर्थ घोषित किया जा चुका है।

राजकुमार पार्श्वनाथ और तीर्थंकर पार्श्वनाथ

–डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

जैन धर्म की मुख्य दो धाराएँ हैं– एक दिगम्बर जैन और दूसरे श्वेताम्बर जैन। दिगम्बर, दिग्–अम्बर–दिगम्बर। दिशाएँ ही जिनकी अम्बर– वस्त्र हैं अर्थात् नग्न। श्वेताम्बर स्पष्ट है जो श्वेत–सफेद वस्त्र धारण करते हैं। जिनके साधु नग्न रहते हैं वे दिगम्बर और जिनके साधु सफेद वस्त्र धारण करते हैं वे श्वेताम्बर। श्वेताम्बर परम्परा में तीर्थंकरों चौबीस ही मान्य हैं किन्तु वहां तीर्थंकरों की सवस्त्र, राजसी रूप में पूजा होती है। दिगम्बर परम्परा में अरहंत अवस्था, अर्थात् केवलज्ञानोपरान्त पूजा होती है।

प्रतिमा–

मध्यप्रदेश के सिद्ध–अतिशय क्षेत्र नैनागिर में 82 से.मी. उत्सेध व 46 से.मी. चौड़े शिलाफलक में एक विलक्षण प्रतिमा प्राप्त हुई है। इस प्रतिमा में दो अलग–अलग आकृतियों का समान स्तर पर साथ–साथ मूर्तांकन किया गया है। बाँयी प्रतिमा स्पष्टतः तीर्थंकर पार्श्वनाथ की है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानस्थ हैं। कुंचित केश, उष्णीस एवं शीश पर पंच सर्पफण हैं। सर्पफण के ऊपर त्रिछत्र है। त्रिछत्र के दोनों ओर गजराज कलश लिये अभिषेक कर रहे उत्कीर्णित हैं। त्रिछत्र के ऊपर ढोल–वादक गंदर्भ है, जिसकी आगे की आकृति भग्न हो गई है। वक्ष पर श्री वत्स चिह्न तीर्थंकर का स्पष्ट द्योतक है। तीर्थंकर के पार्श्व भाग में दोनों ओर अपेक्षाकृत लघु चामरधारी हैं, किन्तु इनकी कलात्मकता उत्कृष्ट है। चॉमरधारियों की सभी देवोचित आभूषणों के अतिरिक्त विशेषता यह है कि अधोवस्त्र पैरों में नीचे तक दर्शाया है, उसकी सलें स्पस्ट देखीं जा सकती हैं। तीर्थंकर आकृति को बगल से देखें तो सिंहासन के ऊपर से ही सर्प कुण्डली बनी हुई है जो ऊपर जाकर पंच–फणाटोप बनाये है। डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन ने इस प्रतिमा का अच्छा परिचय लिखा है किन्तु उन्होंने इस प्रतिमा के सप्त फण आच्छादित लिखा है जबकि पांच फण हैं।

दायीं ओर दूसरी आकृति त्रिभंग मुद्रा में एक पुरुष की आकृति है, जिसे राजसी अलंकारों से अलंकृत किया गया है। कानों में कर्णावतंस, गल–मौक्तिक हार, सुन्दर मुकुटाटोप, सिर के पीछे प्रभामण्डल, भुजबंध, कटिसूत्र, पैजनिया व अधोवस्त्र आदि से अलंकृत है। पुरुष आकृति की दोनों हथेलियाँ टूटी हुई हैं, इससे ज्ञात नहीं होता है कि हाथ में क्या धारण किये है।

दोनों आकृतियाँ एक ही एक ही सिंहासन पर स्थित हैं। आसान में नीचे बीच में चक्र के दोनों ओर विरुद्धाभिमुख दो सिंह, उनके ऊपर चौकी, उसपर आसन जो आगे की ओर पलासना जैसा लटक रहा है।

विश्लेषण– तीर्थंकर के तो पार्श्वनाथ के प्रायः सभी लक्षण सपरिकर होने से स्पष्ट हैं कि यह भगवान पार्श्वनाथ प्रतिमा है। समानान्तर पुरुषाकृति को पार्श्वनाथ के साथ एक ही आसन पर समानता का स्थान दिये जाने से प्रतीत होता है कि यह प्रतिमा पार्श्वनाथ की राजकुमारावस्था की प्रतिकृति है। श्वेताम्बर जैन साखा में जीवन्त स्वामी की कल्पना है तथा उनकी प्रतिमाएं भी प्राप्त होती हैं, किन्तु वे समपादासन और कायोत्सर्ग मुद्रा में ही शिल्पित किये जाने की परम्परा है। त्रिभंगासन में नहीं, इसलिए ये जीवन्तस्वामी नहीं है। डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन के अनुसार ऐसी ही दो विलक्षण प्रतिमाएँ शिवपुरी जिले की खानियाँधाना तहसील के गुडार ग्राम के निकट गोलाकोट नामक स्थल से प्राप्त हुई हैं। इन प्रतिमाओं को डॉ. नवनीत जैन ने सूर्यप्रभा नामक स्मृति ग्रंथ में प्रकाशित किया है। गोलाकोट एवं नैनागिरी से प्राप्त इन प्रतिमाओं में कुछ अंतर भी है। नवनीत जैन द्वारा प्रकाशित प्रतिमा में पार्श्वनाथ सिंहासन पर एवं पुरुष आकृति सादी पीठिका पर है।

जबकि नैनागिरी की इस प्रतिमा में दोनों (पार्श्वनाथ एवं पुरुष आकृति) सिंहासन पर हैं। गोलाकोट की प्रतिमा में दोनों के वक्षस्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह है जबकि नैनागिरी की प्रतिमा में केवल पार्श्वनाथ के वक्षस्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह है। गोलाकोट की पुरुष आकृति दायें हाथ में कमंडलु लिये है। नैनागिरी की पुरुष आकृति की हथेली टूटी है। नवनीत जैन ने गोलाकोट की प्रतिमा को मुनि पार्श्वनाथ एवं तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा माना है। नैनागिरी से प्राप्त यह प्रतिम राजकुमार पार्श्व एवं तीर्थंकर पार्श्वनाथ की है। नैनागिरी की प्रतिमा में पुरुष आकृति के वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिह्न एवं कमंडलु नहीं है, अतः वह मुनि अवस्था के पार्श्वनाथ नहीं हैं। लेकिन सिंहासनासीन एवं प्रभामंडल युक्त है, अतः राजकुमार पार्श्वनाथ हो सकते हैं।

हाईकू : आचार्य श्री विद्यासागर जी का एक

उत्साह बढ़े, उत्सुकता भगे तो अगाध धैर्य (गाम्भीर्य बढ़े)

हम कोई भी कार्य सम्पन्न करते हैं, कार्य करते समय मन में उत्साह होता है, जो कार्य करने को प्रेरित करता है। कार्य की सम्पन्नता पर परिणाम को लेकर मन में बड़ी उत्सुकता होती है कि नतीजा क्या निकलेगा, जो मन को अधीर बना देती है, व्यक्ति बेचैन, परेशान हो जाता है, चित्त को अस्थिर करता है।

गुरुवर कहते हैं- हमारा जीवन किसान की तरह होना चाहिए, उत्साह के साथ खेत में बीज होता है, तत्पश्चात् देखभाल/रखवाली करता है, लेकिन परिणाम को लेकर निश्चिंत रहता है। मेरा काम बीज बोना है, उसकी रक्षा करना है, परिणाम जो मेरे भाग्य में होगा, वह होगा। वह किंचित् भी व्याकुल नहीं होता, पर आजकल कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बीज बोते ही दूसरे दिन से उसके अंकुरित होने की उत्सुकता की चाह में मिट्टी खोदने के चक्कर में बीज को ही खो देते हैं, यही उत्सुकता आतुर करती है, आतुरता में अधीरता होती है, अधीरता अंदर के आत्मविश्वास को खंडित करती है, इसके अभाव में नकारात्मकता बढ़ती है, जो जीवन को दुखी बनाती है।

गुरुवर आगे कहते हैं- हर क्षेत्र के हर कार्य को उत्साहपूर्वक करो, परिणाम की

जिज्ञासा/उत्सुकता को हटा दो। उत्साहित मन से किये गये कार्य ही सफल होते हैं, बुझे मन से किये जाने वाले कार्यों की सफलता संदिग्ध रहती है। जीवन जैसे-तैसे गुज़ारने के लिए नहीं है, मनुष्य पर्याय मिली है, अमूल्य निधि मिली है, भाग्यशाली समझकर कुछ तो महान कर गुज़रो। इसे उत्सव की तरह जीना है, एक-एक क्षण का सही उपयोग/प्रयोग करने में ही मज़ा है। हृदय में उल्हास हो, उमंग हो, तरंग हो, जो कार्य के प्रति प्रेरित करे, चित्त को प्रसन्न करे। जीवन में विपरीत परिणाम आने पर अनउत्साहित ना हों।

गुरुवर आखि़र में कहते हैं- जहाँ अनउत्साहित होने पर चित्त अस्थिर होता है, वहाँ अति उत्साहित होकर कार्य करने पर विफलता आने पर व्यक्ति के हतोत्साहित हो जाने पर अवसाद में जाने का डर भी रहता है। अच्छी भावना से मर्यादा के दायरे में रहकर, अपनी योग्यता व संसाधनों की क्षमता देख कर अगाध धैर्य रखकर, गाम्भीर्य बढ़ाकर हर क्षेत्र के कार्यों को करने में व्यक्ति को सदैव सफलता मिलेगी। इतना करने के बाद भी यदि कदापि असफलता मिलती है तो हताशा नहीं होती, धीरज धैर्य से कर्म का उदय मान कर फिर से आगे बढ़ना ही जीवन है। धैर्य से ही समय की धारा में बदलाव आता है, विषम से विषम परिस्थिति में भी प्रसन्न होकर जीना ही अगाध धैर्य है, जीवन को नई रोशनी मिलेगी, जीवन का उत्थान होगा।

प्रेषक- सुमेरचंद्र जैन

किसान बीज बोने के बाद खेत में जूते पहनकर नहीं दौड़ता

-आचार्य विशुद्धसागर

समझदार किसान बीज बोने के बाद अपने खेत में भी जूते पहनकर दौड़ता नहीं है, क्योंकि उसे बोध होता है । वह जायेगा भी तो एक - एक बिलस्त को देखकर जायेगा । जहाँ हमने बीज बोया है उस बीज पर पैर न पड़ जाये । यदि घूमते हुए मेरा पैर अंकुरण पर पड़ गया तो मेरी फसल कहाँ से आयेगी ?

हे जीव ! अपने स्वयं के जिन बैलों के माध्यम से उसने खेती की थी, जिन बैलों के माध्यम से उसने बीज बोये थे उन बैलों को भी खेत में प्रवेश नहीं करने देता, बाड़ी लगा देता है।

हे श्रमण ! जिस मनुष्यगति का राग ही उस मनुष्यगति को नष्ट कर देगा, उस मनुष्यगति का भी राग छोड़ दीजिए ।

हे मुनि ! आपने पिच्छी - कमण्डलु, दिगम्बर मुद्रा को लेकरके चारित्र का बीज बोया है, उस पिच्छी - कमण्डलु का राग भी छोड़ दीजिए , क्योंकि ये भी उस बैल के समान होगा जो तुम्हारे अंकुर को नष्ट कर देगा । जैसे किसान अंकुरों की रक्षा करता है, वैसे ही हे त्यागियो ! अपने एक - एक समय के परिणामों की रक्षा करो।

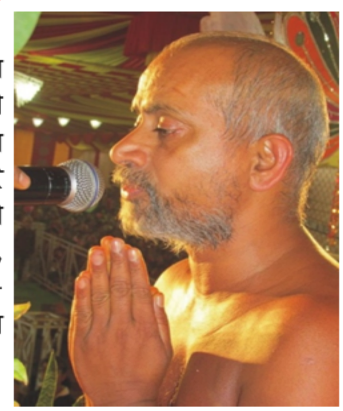

मन और वचन से ही जीवन अजायबघर बनता है

–डॉ. निर्मल जैन

जिस तरह उपवन में खिला हुआ फूल लोगों के मन को लुभाता है, भँवरों को आकर्षित करता है, वातावरण को खुशनुमा बनाता है। ठीक उसी प्रकार पूरी समग्रता से खिला और खुला इंसान लोगों के मन को आकर्षित करता है, समाज में सम्मान पाता है, आसपास के वातावरण को अपने व्यवहार से प्रफुल्लित करता है। यह केवल ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वह अपने आप से संतुष्ट होता है। उसका जीवन अखंड होता है। जो अखंड होता है वह अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार होता है । इसलिए भाव, विचार, वाणी और क्रिया ये चारों बातें एक जैसी करता है। इसलिए उसे यह सोचने की जरूरत नहीं पड़ती कि मेरे भाव और विचार क्या थे और मैं कर क्या रहा हूँ।

जहां वाणी और आचरण में सहयोग है वहां शांति है। दोनों के विलोम होते ही जीवन संघर्ष और टकराव का आखाड़ा बन जाता है। जैसे बांस वृक्षों की आपस में टकराहट अग्नि का कारण बन कर बड़े-बड़े सुरम्य वनों को भस्मी-भूत कर देती है। वैसे ही कथनी और करनी का यह टकराव हमारे संपूर्ण व्यक्तित्व और हमारी सद्गुणों की सुरम्य वाटिका को नष्ट देता है। जिव्हा की आवाज मर्यादित और क्षणिक होती है जबकि जीवन की आवाज असीम और शाश्वत होती है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर जिव्हा से नहीं जीवन से बोलते थे। इसलिए उनकी आवाज आज भी जीवित और प्रतिध्वनित है।

जब तक जिव्हा और जीवन के बीच का फासला समाप्त नहीं होगा तब तक जीवन-वृक्ष पर सौन्दर्य के फूल और सत्य के फल नहीं लग सकते हैं। जब जिव्हा बोलती है तो उसकी आवाज सिर्फ कानों तक पहुंचती है किन्तु जब जीवन बोलने लगता है तो उसकी आवाज कानों के पार हृदय तक पहुंच जाती है।– महावीर।

आचरण के अनुरूप ही मुंह से निकलने वाली वाणी प्रभावकारी एवं स्थायी महत्व प्रदान करने में सक्षम होती है। वाणी और आचरण में विमुखता होते ही हम दोहरा जीवन जीने लगते हैं। हमारे होठों पर अमृत और हृदय में हलाहल रहता है। ऊपर से शांत दिखते हैं, किंतु अंतरंग में कोलाहल ही कोलाहल है। हमारा जीवन कृत्रिमता का अखाड़ा बन जाता है। जिन्दगी बहरूपिए की जिन्दगी बन जाती है। मन और अधरों मे समरसता नहीं दिखती। जिव्हा और जीवन में छत्तीस का आंकड़ा होना ही ही हमारे दुखी और क्लांत होने का कारण है। उस स्थिति में हम ढंग का नही, ढोंग का जीवन जीने लगते हैं। जीवन में आत्मदर्शन का स्थान प्रदर्शन लेने लगता है।

मन, वाणी और आचरण यह सत्य की त्रिवेणी है। –नारायण श्री कृष्ण

उपदेश भी वही सार्थक और प्रभावी होते हैं जो वाणी से नहीं अपने आचरण द्वारा प्रस्तुत किया जाते हैं। आचरण की भाषा बिना कुछ कहे सब कुछ का आभास करा देती है। बदलते परिवेश में हम अपने वाचिक ज्ञान को ही कृत-कृत्य मानकर संतोष पा रहे हैं। हमारी करनी, कथनी से कहीं बहुत पीछे रह गई है। जिव्हा पर राम नाम है लेकिन जीवन रावण के कारनामों का पर्याय बना हुआ है।

आप चाहे कितने भी पवित्र शब्द पढ़ लें या बोल लें, वो आपका क्या भला करेंगे जब तक आप उन्हें उपयोग में नहीं लाते। -बुद्ध।

हमारी इस दोहरी मनोवृत्ति ने जीवन को अनेक मान्यताओं एवं संस्कारों का अजायबघर बना लिया है। हम फूलों से लेकर उनकी खुशबू तक, व्यंजन से लेकर स्वाद तक एवं सजावट से लेकर रौनक तक में कृत्रिमता और ग्लैमर चाहने लगे हैं। इसीलिए हमारे चारों तरफ असंयम का साम्राज्य है। पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांप्रदायिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सभी क्षेत्र में कलह, घृणा एवं द्वेष का तांडव व्याप्त हो गया है।

(लेखक सेवानिवृत्त जज हैं)

सन्नाटा

– डॉ. मुक्ता

अब हमें यहां से चले जाना चाहिए। अपना घर अपना ही होता है। किस चीज़ की कमी है हमें? कम से कम हम उनके जीवन में बाधक तो नहीं बनेंगे? कहीं कल विषम परिस्थितियां उत्पन्न होने के कारण एक-दूसरे से विसंवाद की स्थिति भी न बनी रहे और ताल्लुक़ बोझ बन जाएं; उस स्थान को छोड़ना ही बेहतर व श्रेयस्कर होता है।

-परंतु हम अकेले कैसे गुज़र-बसर करेंगे?

-जिनका कोई नहीं होता, वे भी जीवन जीते हैं।

-ऐसा मत कहो- बच्चे हैं, संभल जाएंगे। आज गुस्से में गुबार निकाल लिया, अब शांत हो जाएंगे। तूफ़ान आने के पश्चात् व्याप जाती है...शांति, अंतहीन मौन व सन्नाटा। चलो! भुला देते हैं यह सब... बचपन में ही

तो बच्चे ग़लतियां करते थे और हम उनकी भूलों को सहज भाव से स्वीकारते थे। फिर आज ऐसा कठोर निर्णय क्यों?

इतना सुनते ही वे अलौकिक-असीम शांति में प्रवेश कर गए और घर में मातम-सा पसर गया।

(पूर्व निदेशक-हरियाणा साहित्य अकादमी)

आज की प्रेरणा

सूर्य की समयबद्धता सबके लिए एक पाठ

प्रवचनकार- आचार्य महाश्रमण

विनय से सम्पत्ति और अविनय से विपत्ति की प्राप्ति होती है। व्यक्ति ज्ञान, जाति व रूप के घमंड में अहंकार ग्रस्त हो जाता है। जीवन में विनय व अनुशासन का बड़ा महत्व होता है। अनुशासन के अभाव में न व्यक्ति, न समाज व न ही राष्ट्र खुश रह सकता है। अनुशासन में एकता होती है व एकता में बड़ी शक्ति होती है। एक बनकर हम किसी भी बड़ी शक्ति से भी मुकाबला कर सकते हैं। मेरा मानना है कि राजतंत्र से लोकतंत्र प्रणाली ज्यादा अच्छी व व्यावहारिक है। जनता का कार्य, जनता द्वारा व जनता के लिए। इसमें सब नेता भी सतर्क रहते हैं व अपने दायित्व का निर्वहन करते रहते हैं। लोकतंत्र में भी अलोक रहे क्योंकि डिस्सीप्लिन लेस डिमोक्रेसी भी काम की नहीं होती। लोकतांत्रिक रथ का पहला पहिया है- अनुशासन व दूसरा पहिया- कर्तव्य-निष्ठा। हर जगह अनुशासन व विनय का महत्व है व धार्मिक संगठन में भी इसका कम महत्व नहीं। विनय को धर्म का मूल माना गया है। मर्यादित रहने के बात या तो सागर से सीखें या फिर सूर्य से जो कभी अपनी समयबद्धता का अतिक्रमण नहीं करता। समय पर उदय व समय पर अस्त, न पहले और न बाद में।

प्रवचन स्थल-जोबनेर।

एक छोटे से वायरस ने सिखा दिया हमें सह अस्तित्व व अपरिग्रह का सिद्धान्त

-मंजू लोढ़ा

आज सुबह अलमारी खोली तो लगा अलमारी में रखा सारा सामान मेरा मुंह चिढ़ा रहा है और मुझसे कह रहा है 'कितना परिग्रह किया है तुमने वस्तुओं का, रोज इन्हें देख देख कर इतराती थी, आज कौन सा ड्रेस बाहर निकालूँ, साथ में मैचिंग गहने, ब्रांडेड पर्स, बटुए, घड़ी, चश्मे, गॉगल्स, जूते, चप्पल और न जाने क्या-क्या' और मेकअप से भरी अलमारी तो ठहठहा कर हँस पड़ी, 'कहां है मेरी जरूरत? पिछले ९ महीने से मेरे बिना भी तो काम चल रहा है, इस सादगी में भी तो सुंदर और आकर्षक लग रही हो।' उसकी बात सुनकर मुझको लगा यह अलमारियां सच ही तो कह रही हैं, कितना कुछ हम इकट्ठा करते हैं, एक दूसरे से होड़ करते हैं, ठूंस-ठूंस कर सामान भरते हैं, क्या इससे आधे में काम नहीं चल सकता? सच कहूं तो आधे से भी कम में चल सकता है। आज अरबों, करोड़ों, लाखों, हजारों वाले सभी एक धरातल पर खड़े हो गए हैं, सभी घरों में लॉक डाउन हो गए हैं, एक पल में ही सब कुछ बदल जाता है। हम सब कितनी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, ऊँच-नीच का भेदभाव करते हैं, अमीरी-गरीबी का फर्क करते हैं, अपनी उपलब्धियों पर, सम्मान पर, इतराते हैं, अभिमान करने लगते हैं, स्वयं को राजा समझने लगते हैं, एक वायरस ने सबको धरती से जोड़ दिया, सभी समान हो गए, इससे हमें भी यही शिक्षा लेनी चाहिए कि जब अच्छे दिन आएंगे, हम सब सहज जीवन जीयें, खुद को ईश्वर न समझ कर उसका एक नेक भक्त समझें, अपने ह्रदय में एक अदद मानवता बनाए रखें। यह भी सच है कि हम एकदम से त्यागी नहीं बनेंगे, हम सजेंगे, संवरेंगे, बाहर भी जाएंगे, अच्छी वस्तुओं का उपयोग भी करेंगे, लेकिन जरूरत से ज्यादा चीजों का संग्रह न करने की एक छोटी सी कोशिश तो कर सकते हैं। चार नई चीजें लेंगे तो, चार निकालकर किसी जरूरतमंद को दे देंगे। धरती से जुड़कर, धरती वालों के लिए कोई नेक कार्य जरूर करेंगे, प्रभु महावीर के सिद्धांतों को जीवन में जरूर अपनाएंगे।

स्वामी विवेकानंद जयंती पर विशेष

उठो जागो और तब तक नहीं रुको जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति ना हो : स्वामी विवेकानंद

वेदांत के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु स्वामी विवेकानंद जी का जन्म १२ जनवरी १८६३ ईसवी कोलकाता में हुआ था। उनका बचपन का नाम नरेंद्र नाथ दत्त था लेकिन बचपन में उन्हें सब नरेंद्र नाम से पुकारते थे। उनके पिताजी का नाम विश्वनाथ दत्त था जो कि उस समय कोलकाता हाई कोर्ट के प्रतिष्ठित और सफल वकील थे। कोलकाता की एक कुलीन परिवार में जन्मे विवेकानंद जी आध्यात्मिक की ओर झुके हुए अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे, जिनसे उन्होंने सीखा की हरेक जीवो में स्वयं परमात्मा का ही अस्तित्व है।

जो मनुष्य दूसरे जरूरतमंदों की मदद करता है या सेवा द्वारा परमात्मा की भी सेवा की जा सकती है। वहीं विवेकानंद जी की माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था जो कि धार्मिक विचारों की महिला थी। वे विलक्षण और काफी प्रतिभावान महिला थी जिन्होंने धार्मिक ग्रंथों जैसे रामायण और महाभारत में काफी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। गुरु रामकृष्ण देव की मृत्यु के बाद विवेकानंद जी ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप का दौरा किया और ब्रिटिश भारत में मौजूदा स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान हासिल किया, बाद में विश्व धर्म संसद १८९३ में भारत का प्रतिनिधित्व करने संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। विवेकानंद जी ने संयुक्त राज्य अमेरिका इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के सिद्धांतों का प्रसार किया एवं भारतीय तत्त्वज्ञान की अद्‌भुत ज्योति प्रदान की। उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनकी मृत्यु ४ जुलाई १९०२ में हुई।

पूजा भूषण झा (बिहार)

चिंतन कुछ हटकर

हर नया बासा होने के लिए आता है

मुझे ध्यान नहीं आ रहा कि जबसे मैंने होश संभाला है या यूं कहें कि जब तारीख वगैरह लिखना समझना शुरू हुआ मैंने अपनी कॉपी में तारीख की जगह चैत्र सुदी दोज या द्वादशी वगैरह लिखा हो।

शायद ही कभी चैत्र प्रतिपदा पर सूर्य देवता को अर्घ्य देकर अपने इष्ट देव और माता-पिता के चरण स्पर्श कर वर्ष की शुरुआत की हो।

वैसे संस्कारों के लिहाज से तो हर तिथि-त्यौहार जन्म दिन, शुभ दिन पर अपने मां-पापा का आशीर्वाद लिया करते थे, यहां तक कि अन्य उपलब्ध बड़ों का भी भले ही वो हमारे रक्त सम्बन्धी न भी हों।

लेकिन एक बात तो हमेशा रही, वो साल के बारह महीने जनवरी से शुरू होकर दिसम्बर तक जाते थे। अनवरत, हर साल। मतलब हमारा साल दिसम्बर में खत्म हो जाता था और मुआ जनवरी में शुरू हो ही जाता था। तो वर्ष बदलने की यह आंग्ल प्रक्रिया सहज स्वीकार्य रही, सभी के, वो उस समय के बच्चे हों या तत्कालीन बड़े, हाँ बहुत जोर से हैप्पी न्यू ईयर ना कहा हो, पर सबने मान लिया होता था कि दिसम्बर बासा हो गया और जनवरी ताजा आ गया जो भले ही फरवरी के अंत तक हल्की फुल्की बदबू के साथ बासा हो जाता था, कमोबेश हर माह की यही दुर्दशा आ कर दिसम्बर पर समाप्त होती थी और फिर अंकों के नए समीकरण के साथ वही पुराना जनवरी झेंपता सा नए कुर्ते पाजामे में आ धमकता और हम कहते कि यह सर्व स्वीकार्य नया साल आ गया।

लब्बे लुआब यह है कि, अब तो शादी ब्याह के कार्ड में से मिति और सुदी ने भी बाय बाय कर लिया। तो इस वर्ष अगर आपके पास यह मैसेज आये कि हमारा नया वर्ष तो चैत्र प्रतिपदा से आरंभ होता है तो उससे पूछना कि व्यवहारिक रूप से क्या आप अपना पूरा कार्य इन्हीं तिथि, पक्ष और माह के हिसाब से कर रहे हैं, उत्तर होगा १०० प्रतिशत नहीं।

तो मित्रो यह चैत्र, वैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ अपने घाघ भड्डरी जी के लिए छोड़ दें, मिति, सुदी, शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष, इत्यादि पंचांग और विवाह की लग्न इत्यादि के लिए रहने दें।

हमसे किसने कहा कि आप ३१ दिसम्बर की रात को १२ बजे टुन्न हो डी जे धूम-धड़ाम के साथ १ जनवरी का स्वागत करो।

अरे भैया एक जनवरी की अल्ल सुबह उठें, अरुणित सूर्य देव को अर्घ्य देकर नव वर्ष का स्वागत करें, फिर यदि संभव हो तो बड़ों को यथोचित प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

प्रेषिका- राजकुमारी अग्रवाल

नये वर्ष में आपने क्या संकल्प लिया है ?

१. सहज और शांत रहने का
२. अकारण क्रोधित नहीं होने का
३. साधर्मी वात्सल्य भाव मजबूत करने का
४. नित्य प्रति देवदर्शन और पूजन का
५. नित्य प्रति स्वाध्याय करने का
६. सप्ताह में एक दिन सामायिक और ध्यान अभ्यास करने का
७. समाजिक, देश के कार्यों में सहयोग करने का
८. परिवार में धार्मिक संस्कार जागृत करने का
९. व्यापारिक कार्यों में झूठ नहीं बोलने और टैक्स चोरी नहीं करने का
१०. सर्विस में पूर्ण ईमानदारी से कार्य करने का विकल्प चुनें।

प्रस्तुति- डॉ. अशोक जैन गोयल, दिल्ली

(लघुकथा)

नम हुईं आखें

-डॉ. सुषमा सिंह, (आगरा)

आई.ए.एस.आकाश जब डी.एम. बनकर अपने उस शहर में पहुँचे, जहाँ उन्होंने प्राइमरी शिक्षा प्राप्त की थी, तो वे उस स्कूल में जाने का लोभ संवरण नहीं कर सके। जब वे वहाँ पहुँचे, तो उस समय जो उनकी कक्षा-अध्यापिका थीं, वे प्रधान अध्यापिका बन चुकी थीं । उनके कार्यालय में जाकर उन्होंने श्रीमती शीला जी के चरण स्पर्श किये और बताया- 'मैडम, मैं आकाश वाजपेयी, जो क्लास में रोता था, तो आप टॉफी देकर चुप कराती थीं और दूसरी कुर्सी मंगा कर अपने पास बिठाती थीं । मेरे रो-रो कर ज़िद करने के कारण आप कक्षा पाँच तक मेरी क्लास टीचर रही थीं । अपनी हर परेशानी मैं आपसे ही कहता था, यहाँ तक कि मम्मी-पापा से भी मुझे कोई शिकायत होती थी, तो वह भी मैं आपको ही बताता था और आपसे उनको डाँट पड़वाता था, कुछ याद आया मैडम आपको?' शीला मैडम बहुत ध्यान से आकाश को देख रही थीं, बोलीं- 'बेटे, बहुत पुरानी बात याद दिला दी तुमने। यह तुम्हारे माथे पर उसी समय की चोट का निशान है न? जब तुम दौड़ते हुए खेल के मैदान में गिर गए थे और क्यारी की ईंट घुस जाने से गहरी चोट लग गयी थी । आकाश ने कहा- जी मैडम! आप स्कूल के फर्स्ट एड से संतुष्ट नहीं हुई थीं और डॉक्टर के पास ले जाकर टांके लगवा कर लाई थीं। तब से मेरे मासूम दिल ने आपको बहुत ऊंची और खास जगह दे दी थी । पापा के तबादले के कारण हम दिल्ली चले गए, फिर कभी इधर आना ही नहीं हुआ। आज ऑफिस जाने से पहले आपसे मिलने का मन हुआ तो इधर चला आया। तभी राजवती बाई मैडम के पास किसी काम से आई, तो उसे पहचानते हुए आकाश एकदम बोले- ''आप तो वही हैं न, जो हमें बाथरूम लेकर जाती थीं और लंच के बाद हमारा मुँह पौंछा करती थीं? आकाश हूँ मैं, १९९५ में नर्सरी में आया था'' और झुककर उन्होंने राजवती के पाँव छू लिए । 'अरे, जे का करत हौ बेटा ?' कहते हुए वह पीछे को हटी, तो आकाश ने कहा-'आप सभी के आशीर्वाद से ही मैं यहाँ तक पहुँचने लायक हुआ हूँ! आप सबके लिए मिठाई लाया हूँ।' कहते हुए आकाश ने साथ आए अपने ड्राइवर की ओर देखा, तो उसने एक मिठाई का डिब्बा प्रिंसिपल मैडम की ओर बढ़ा दिया। शीला मैडम और राजवती की आँखों में प्रसन्नता के अश्रु छलछला आए।

युवा पीढ़ी... एक चुनौती.. एक प्रश्न..

आज के युवा पीढ़ी के आगे बहुत सारी चुनौतियां हैं.. एक तो बढ़ती आबादी, दूसरा जॉब में बढ़ता हुआ कॉम्पीटिशन, और तीसरा कॅम्प्यूटर युग का आव्हान। इन सब परिस्थितियों में खुद को सिद्ध करना यही सबसे बड़ी चुनौती आज के नव युवकों के आगे है। ऊपर से इस कोरोना जैसी महामारी में शिक्षा लेना भी मुश्किल हो रहा है.. पढाई करो तो एक्जाम नहीं होता। एक्जाम दो तो पेपर लीक होता है.. और ये सब नहीं हो तो शिक्षकों का हड़ताल तो हो ही जाता है। तो बच्चे ना ढंग से शिक्षा ले पाते हैं और ना कुछ बन पाते हैं। इस परिस्थिति में लड़की हो तो उसकी जल्दी शादी करा दी जाती है और लड़का हो तो उसे माँ-बाप के ताने खाने पड़ते हैं... इस कशमकश में ना लड़कियों का कैरियर बनता है, ना लड़कों का कैरियर बन पाता है। फिर जो कमजोर दिल वाले होते हैं वो सुसाईड कर अपनी जिंदगी को ही खत्म कर देते हैं.... तो अब सवाल ये उठता है कि हमारी युवा पीढ़ी जो कल के भारत का भविष्य है उसके आज के भविष्य का जिम्मेवार कौन है? कौन उनके भविष्य को सॅवारेगा... कौन उनके मंजिल को अंजाम देगा.... इसका जवाब ना उनके पास है, ना उनके माँ-बाप के पास है, ना सरकार के पास है... और यही बात हम सबको सोचने पर मजबूर कर देती है..... आज की युवा पीढ़ी इसी उत्तर की तलाश में भटक रही है कि शायद किसी के पास इसका जवाब हो.... क्या आपके पास है इसका जवाब..??

-वर्षा भिसे

क्या मकर संक्रांति जैन पर्व है?

मकर संक्रान्ति महापर्व पर जिनवाणी माता के मानस पुत्र मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज जी ने शंका समाधान दिया है कि मकर सक्रान्ति जैन पर्व है।

इस दिन श्री भरत चक्रवर्ती अपने महल के ऊपर टहल रहे थे सहसा उनकी दृष्टि सूर्य पर पड़ी, उस वक्त सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश कर रहा था। चक्रवर्ती को निधियाँ प्राप्त होती हैं एवं भरत जी के शरीर की अवगाहना १६६६ हाथ की थी सो उन्हें सूर्य के विमान में जिनबिंब के दर्शन हुए।

यह बहुत सौभाग्य का विषय था कि मनुष्य जाति के जीव ने देवों के विमान में अकृत्रिम चैत्यालय के दर्शन किए।

इसी खुशी में भरत महाराज ने पूरी अयोध्या व सर्व राज्य में तिल के लड्डू बँटवाए व सभी लोगों ने भरत महाराज के पुण्य की अनुमोदना की व हर साल इस दिन को मकर संक्रान्ति के रूप में मनाया जाने लगा।

ऐसा उल्लेख प.पू.बालयति आचार्य भगवंत जिनसेन स्वामी ने महापुराण में किया है। महापुराण प्रथमानुयोग के श्रेष्ठतम ग्रन्थराज हैं।

मकर सक्रान्ति जैन पर्व है, इसे मनाने से हमारे सम्यक्त्व में वृद्धि होती है।

अमृतसर में प्राचीन जैन मंदिर

पंजाब के सरहदी शहर अमृतसर जहां सिख धर्म का मुख्य स्वर्ण मंदिर है जिसका इतिहास है कि गुरुराम दास जी ने सुंदर नगरी बसाई थी। उसी के साथ उसी परिसर में तीन सौ साल पुराना दिगंबर जैन मंदिर है व अन्य धर्मों के मंदिर भी हैं। यहाँ जैन मंदिर में दो दिन अभिषेक शांतिधारा करने को सौभाग्य मिला। यहाँ पर सिर्फ एक मात्र मुनि आचार्य श्री प्रमुख सागर जी का संघ आया था। मुझे बताया गया कि यहाँ एक काले पाषाण की भगवान श्री पार्श्वनाथ जी की चमत्कारी मूर्ति है जो वजन में बहुत हल्की है, जिसे मैंने उठाया तो यह नहीं लगा कि ये पाषाण की है, एकदम हल्की लगी। फ़ोटो संलग्न है।

मंदिर की मुख्य विशेषता यहाँ की भगवान श्री पार्श्वनाथ जी की

८४६ साल पुरानी मूर्ति है, जिसके बारे कहा जाता है कि ये पाकिस्तान से लायी गयी है। मूर्ति पर आलेख भी है, जो पढ़ा नहीं जा सका व यहाँ रखे शास्त्र उर्दू में लिखे गये हैं। श्री सुभाष जी व दिनेशजी ने कहा कि वे चाहते हैं कि जैन समाज का कोई विद्वान् यहाँ आकर दो तीन दिन रहकर आलेख व उर्दू शास्त्र में क्या लिखा है वो पढ़े तो हम देश की जैन समाज को इसकी जानकारी दे सकें। मंदिर पूरे दिन दर्शन के लिए खुला रहता है। यहाँ आने वाले जैन भाई इनसे सम्पर्क कर सकते हैं। समाज व धर्म सेवा में अग्रणी दिनेशजी, सुभाष जी व मनीष जी तीनों की व्यवहार कुशलता मन को छू गयी। हमे दो दिनों तक तीनों ने आग्रह पूर्वक घर भोजन कराया। इनका कहना है कि मेहमान यहाँ आते हैं तो हमें बहुत खुशी होती है। यहाँ के अध्यक्ष श्री विमल जी हैं।

सुभाष जी लगभग १६ साल से यहाँ रह रहे हैं, उन्होंने प्रण लिया है कि जब तक धर्मशाला नहीं बनती खुद का घर नहीं ख़रीदेंगे। मंदिर के पास ही प्रसिद्ध जलियाँवाला बाग है, जहां जरनल डायर ने बेगुनाहों को गोलियों से भून दिया था, जिसके बाद आज़ादी का आंदोलन उग्र हुआ। हमने वाघा बॉर्डर पर शाम को देश के जवानों की परेड सेरेमनी देखी उसी समय गेट के दूसरी तरफ सामने पाकिस्तान की परेड भी देखने को मिली।

-जमनालाल जैन हपावत, मुंबई, श्री दिगंबर जैन ग्लोबल महासभा

हिन्दी की व्यथा

–अनिल ओझा,
इंदौर

हम हिन्दी के पुजारी हैं और हिन्द के वासी।
क्यों हिंदी के चलन में छाई है उदासी
बोलें जो हिन्दी करते हैं अंग्रेजी मिलावट।
हस्ताक्षर करें तो अंग्रेजी लिखावट।।
बच्चे पढ़ें कान्वेंट में सब की यही चाहत।
ये हाल अपना देख कर हिन्दी हुई आहत।।
हिन्दी तो आज भी हमारे प्यार की प्यासी।
क्यों हिन्दी के चलन में छाई है ये उदासी?
हिन्दी हो राष्ट्र भाषा से, इनकार नहीं है।
अन्य भारतीय भाषाओं से तकरार नहीं है।।
है कौन शख्श जिसको माँ से प्यार नहीं है।
फिर हिन्दी का वर्चस्व क्यों स्वीकार नहीं है?
माँ को न माने माँ , परदेसी को माँ–सी।
क्यों हिन्दी के चलन में छाई है ये उदासी?
माँ भारती के भाल पर हिन्दी का ताज हो।
सारे ही हिंदुस्तान में हिन्दी का राज हो।।
हिन्दी में ही सम्पन्न सभी राज काज हो।
होने का हिंदुस्तानी हमें भी तो नाज़ हो।।
अब न कोई चाल चले और सियासी।
क्यों हिंदी के चलन में छाई है ये उदासी?

साहित्य परिषद त्रिदिवसीय अधिवेशन संपन्न

अखिल भारतीय साहित्य परिषद के तीन दिवसीय अधिवेशन में देश के लगभग पांच सौ विद्वानों ने भाग लिया। डॉ. आदित्य कुमार अंशु बलिया ने भी अपनी सहभागिता दर्ज करायी। इस अवसर पर ओज के चर्चित कवि श्याम नारायण पाण्डेय (आजमगढ़) की वयोवृद्ध पत्नी की उपस्थिति समादरणीय रही। परिषद् के संगठन मंत्री आदरणीय श्रीधर पराड़कर जी सभी को सद् साहित्य, प्रशस्ति-पत्र, बैग आदि देकर सम्मानित किया गया।

आचार्य पं. पृथ्वीनाथ पाण्डेय की पाठशाला

षष्ठ स्तवक

हमने अपने पाठकवर्ग के लिए इस अंक से एक ऐसे स्तम्भ का समारम्भ किया है, जो निस्सन्देह, भाषा के क्षेत्र में एक ''मील का पत्थर'' सिद्ध होगा। ऐसा इसलिए कि इस स्तम्भ के अन्तर्गत उन शब्दों और वाक्यों की शुद्धता और उपयुक्तता बतायी जायेगी, जिनसे हमारा समाज परिचित रहते हुए भी, उनके शुद्ध प्रयोग के प्रति सजग रह नहीं पाता।

इस अंक से प्रतिष्ठित व्याकरणाचार्य, भाषाविद्, भाषाविज्ञानी तथा समीक्षक आचार्य पं. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, प्रयागराज हमारे पाठकवर्ग को शुद्ध और उपयुक्त शब्द-प्रयोग के प्रति जागरूक करेंगे। आप गम्भीरतापूर्वक 'आचार्य पं. पृथ्वीनाथ पाण्डेय की पाठशाला' में अध्ययन करते हुए, अपने 'शब्दज्ञान' का विस्तार करें और हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करायें। –सम्पादक

१९२– डी.लिट., डी. लिट्. (डी० लिट्०) १९३– कक्षा एग्यारहवीं, कक्षा ग्यारहवीं (ग्यारहवीं कक्षा) १९४– पंचम् (पंचम) १९५– नवम् (नवम) १९६– परम् (परम) १९७– पूज्यनीय (पूज्य/ पूजनीय) १९८– खर्चे गये (ख़र्च किये गये) १९९– स्वीकारा (स्वीकार किया) २००– शतप्रतिशत (सौ प्रतिशत) २०१– बाइस (बाईस) २०२– तेइस (तेईस) २०३– नब्बे (नब्वे) २०४– पिचासी (पचासी) २०५– पिंचानबे, पंचानबे (पंचानवे) २०६ – एकइस (इक्कीस) २०७– अन् र्तजातीय (अन्तर्जातीय) २०८– प्रणाम महोदय (महोदय! प्रणाम।) २०९– एतिहासिक (ऐतिहासिक) २१०– बहुपयोगी (बहूपयोगी) २११– जय श्रीराम (जय श्री राम) २१२– गौशाला (गोशाला) २१३– कोरोना–– एक आपदा (कोरोना रू एक विपदा) २१४– रातो रात (रातोंरात) २१५– फसल/फ़सल (फ़स्ल) २१६– उन्मादनी (उन्मादिनी) २१७– सरोजनी (सरोजिनी) २१८– ईस्वी (ईसवी) २१९– संबत/संम्बत (संवत्) २२०– सृष्टा (स्रष्टा) २२१– लब्धप्रतिष्ठित (लब्धप्रतिष्ठ/लब्ध–प्रतिष्ठ)

क्रमशः

प्राचीन जैन मानस्तंभ

चरथाना (तालु- जिंतूर, जिला- परभणी) में एक ३४ फीट ऊंचा शानदार सुंदर और कलात्मक स्मारक है। यह १३वीं शताब्दी का है। इसकी तुलना पैठण के स्तंभों और ऐलोरा की गुफाओं से की जा सकती है। इस पर चारों दिशाओं में चार देवियों की नक्काशी की गई है। चारों देवियों के ऊपर छोटे देवकोष्ठों में जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ हैं, इसलिए ये सभी देवियां जैन शासनदेवियां हैं।

पूर्व में चक्रेश्वरी हाथ में चक्र लेकर गरुड़, उत्तर में पद्मावती हंस, पश्चिम में अंबिका सिंह, दक्षिण में ज्वालामालिनी वृषभ और अष्टभुजा है। इस स्तंभ के सामने मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक तोरण के अवशेष मिले हैं। इस मूर्ति/स्तंभ पर शोध करने वाले शोधकर्ता लक्ष्मीकांत सोनवतकर के अनुसार यदि खुदाई की अनुमति दी जाए तो यहां एक भव्य प्राचीन जैन मंदिर मिलना संभव है।

वर्तमान में यह पूरा क्षेत्र बंजर भूमि बन गया है। लेकिन सरकार से अनुमति और खुदाई के लिए धन के बिना इस समस्या का समाधान नहीं होगा। सरकार से धन प्राप्त न होने की स्थिति में जैन संगठनों को इस ओर ध्यान देना चाहिए तथा धनराशि उपलब्ध करानी चाहिए।

काव्यांजलि

हो मंगलमय नया साल

–बृजेन्द्र सिंह झाला 'पुखराज'

शीत वसन पहने हुए,
लुभा रहा है भोर काल ।
किरणें सूरज की पूरब से,
चमक रही हैं लाल लाल ।।
महक उठा सर्वत्र चमन,
गूँजे पंछी की मधुर ताल ।
कह रही हैं हवाएं ठंडीं,
हो मंगलमय नया साल ।
निस्वार्थ त्याग–बलिदान–प्रेम का,
दिखा रहा है सबको दर्पण ।
स्रोत बना एक आदर्शों का,
ख़ामियाँ कर दें सब अर्पण ।।
एकता का जहाँ बिगुल बजे,
भाईचारा एक मिसाल बने ।
ज्योति जले स्वाभिमान की,
आत्मविश्वास एक ढाल बने ।।
नई प्रेरणा पाकर पर हम मिल,
एक नया विश्वास जगाएँ ।
हँसी–खुशी के साथ प्रेम का,
उर अन्तर में दीप जलाएँ ।।
एकजुट हो संगठित शक्ति बन,
करें सफाया कई बलाएँ ।
राह दिखा भूले–भटके को,
सद् मार्ग की तरफ चलाएँ ।।
रहे भावना प्रबल हमारी,
संकल्प दोहराएँ हर हाल ।
कह रही हरी–भरी वादियाँ,
हो मंगलमय नया साल ।।
कह रही हैं हवाएँ ठंडीं,
हो मंगलमय नया साल ।।

समय बड़ा बलवान है

–प्रवेश 'अकेला', आगरा

कल क्या हो नहीं पता है,
न ही कोई अनुमान है।
राजा को रंक बना दे
समय बड़ा बलवान है।।

बाहुबली हैं आज जो,
कल भी क्या रह पायेंगे।
झाड़ते रौब ताकत का,
कल वो मुंह छुपायेंगे।।
वक्त एक सा नहीं रहता,
जानता सारा जहान है।
राजा को रंक बना दे,
समय बड़ा बलवान है।।

समझते खुद को मुखिया,
जनता उनकी जागीर है।
चाहे जितना लूट खा लें,
ये सब उनकी तकदीर है।।
समय ने पलटा पांसा,
धुल गये सब अरमान है।
राजा को रंक बना दे।
समय बड़ा बलवान है।।

अपनों के हुए वारे न्यारे,
जनता ही तो ठगाती थी।
विकास तो अपना होता,
जनता बस तरसती थी।।
खुल गया काला चिठ्ठा,
शर्म का न कोई निशान है।
राजा को रंक बना दे,
समय बड़ा बलवान है।।

नैतिक मूल्य

–गरिमा खंडेलवाल उदयपुर

मूल्य होते जीवन का श्रृंगार,
वाणी में मधुरता रखे दिल उदार,
बड़ों को सत्कार छोटों को प्यार,
सभ्य आचरण ही शिष्टाचार।

मूल्य सृजन करते संस्कार,
विनय निर्मल भाव परोपकार,
शालीन वाणी संयमित व्यवहार ,
देते व्यक्तित्व को निखार ।

आदर्श का बनाते नक्शा,
नैतिकता की परिभाषा,
मूल्य की महत्ता इतनी बड़ी,
जितनी जीवन की आशा।

लक्ष्य शिखर की बुनियाद ,
मूल्य सह ले सारे आघात ,
शिखर सफलता जब मिल जाए ,
नैतिक मूल्य को शीश नवाए ।।

सही वक्त का आने इंतज़ार करता हूँ..!

–कमल सिंह सोलंकी, रतलाम

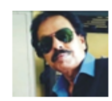

धूप हो या छांव दोनों से मैं रिश्ता बनाए रखता हूँ..!
मैं अपने जीने का अंदाज़ सदा दरख़्त जैसा रखता हूँ..!

ज़माने का क्या बेवजह शब्दों के पत्थर फेंकते रहते हैं..!
मैं उनके शब्द रूपी पत्थरों को ख़ामोशी से सहता हूँ..!

सही वक्त पर ही माकूल जवाब दे तो कोई बात बने..!
इसलिए मैं तो सही वक्त आने का इंतज़ार करता हूँ..!

हर एक की फितरत उनके शब्दों में ही झलकती है..!
हर किसी के चरित्र को मैं सदा शब्दों से ही गढ़ता हूँ..!

देव-शास्त्र-गुरु ही हमारी सबसे बड़ी संपदा है -श्रमण मुनि विशल्यसागर

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के मंगल आशीर्वाद से एवं उनके परम शिष्य जिनश्रुत मनीषी आगमनिष्ठयोगी श्रमण श्री विशल्यसागर जी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में झारखण्ड सराकक्षेत्र देवलटांड़ में श्री १००८ शांतिनाथ महामण्डल विधान एवं जिनबिम्ब स्थापना श्री जी की शोभा यात्रा बड़ी

धूमधाम से संपन्न हुई। इस अवसर पर प.पू. श्रमणमुनि श्री विशल्यसागर जी मुनिराज ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ज्ञान तभी पूज्य बनता है जब उसके साथ विरागता और विनम्रता हो, यदि हम अहंकार के गुलाम हैं तो समझो अज्ञान हम पर हावी है पर यदि हम विनम्रता और विरागता के पुजारी हैं तो इसका मतलब है कि ज्ञान का प्रकाश हमारे अंदर सुरक्षित है। मुनिश्री ने कहा कि दिगम्बरत्व से समाज की पहचान है, दिगम्बरत्व के प्रति सच्ची आस्था और श्रद्धा ही हमारी सबसे बड़ी संपदा है। देव-शास्त्र-गुरु के प्रति हमेशा श्रद्धावनत रहो, इनके प्रति सच्ची आस्था ही हमें पार लगाएगी। कार्यक्रम का आयोजन श्री संजय जैन पाटनी परिवार द्वारा किया गया।

निकली नहीं फिर आज भी गौरैया बाग में

गजल

डॉ.रामावतार सागर
कोटा, राज.

हैरान आसमान है परवाज़ देखकर।
ये जो नये परिंदों के अंदाज देखकर।।

रोटी नहीं भायी है जो माँ को आज फिर,
बच्चे खिलौनों के लिए नाराज देखकर।।

आने लगी है याद क्यों फिर बादशाही की,
जनता के तंत्र में भी शाही राज देखकर।।

लड़ते हुए कबूतरों को देखकर लगा,
अब तो संभलना चाहिए ये खाज देखकर।।

निकली नहीं फिर आज भी गौरैया बाग में,
बस्ती के बीच में यूं भूखे बाज़ देखकर।।

सागर मिलन से पहले ही क्यों सूख जाती है,
शायद तुम्हारे अनकहे कुछ राज देखकर।।

नये वर्ष पर माँ कौशल के सान्निध्य मेंश्री वर्धमान स्तोत्र की स्थापना व वाचन

गाजियाबाद। नववर्ष १ जनवरी को श्री वर्धमान स्तोत्र की स्थापना कर संस्कृत एवं हिंदी दोनों में वाचन पूज्य माँ श्री कौशल जी के पावन सान्निध्य में अ. भा. दिगम्बर जैन महिला परिषद दक्षिण संभाग नई दिल्ली एवं जैन महिला समिति कविनगर ग़ाज़ियाबाद के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

दीप प्रज्ज्वलन - श्रीमती आशा विनायका जी, राष्ट्रीय संरक्षिका, इंदौर मंगलाचरण- डॉ. विमला जैन राष्ट्रीय अध्यक्षा, केंद्रीय महिला परिषद् जबलपुर, मंगल कलश स्थापना - श्रीमती विजय जैन राष्ट्रीय

अध्यक्ष, जिनवाणी स्थापना - प्रख्यात विदुषी डॉ. नीलम जैन, पुणे द्वारा की गई। एक एक सदस्य ने १-१ श्लोक का वाचन किया पूज्य मां श्री ने सभी को आशीर्वाद दिया और कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि मेरी प्रेरणा से बनी हुई महिला समिति पूर्ण समर्पण से कार्य कर रही है। महिलाओं को इसी प्रकार धर्म कार्यों में लगे रहना चाहिए। कार्यक्रम का सुंदर संयोजन सम्भागीय अध्यक्षा- श्रीमती रेखा गोयल जैन, सचिव - श्रीमती रेणु जैन (गुलमोहर पार्क), कोषाध्यक्ष - श्रीमती सुषमा जैन - द्वारा किया गया।

त्रिलोकतीर्थ धाम बड़ागांव में पुलिस चौकी स्थापित

बड़ागांव। १ जनवरी को त्रिलोकतीर्थ धाम बड़ागांव में श्री नीरजकुमार जी जादौन पुलिस अधीक्षक महोदय बागपत के करकमलों से एव संस्था के अधिष्ठाता राजेंद्रप्रसाद जी, अध्यक्ष गजराज जी गंगवाल, कार्याध्यक्ष महेंद्रकुमार जी एवं सुशील जी, प्रवीनजी, इंद्रेश जी, रमेश जी, अशोक जी, प्रमोद जी, संदीप जी, त्रिलोक जी व समस्त त्रिलोक परिवार के सान्निध्य में पुलिस चौकी का उदघाटन किया गया।

जैन समाज की जनगणना – वर्तमान समय की एक बड़ी आवश्यकता

समाज के मुखियाओं को तक नही पता हमारे गाँव / नगर मे कितने हैं जैन परिवार ! न सरकार में प्रतिनिधित्व है न कोई आधिकारिक वित्तीय लाभ।

–अनिल बड़कुल

हम ४० लाख हैं यह सरकार बताती है, हम २ करोड़ से कम नहीं ऐसा हम आप कहते हैं..... पर ऐसा बोलने बालों को तक नहीं पता कि उनके अपने नगर या गाँव की वास्तविक जैन समाज की संख्या कितनी है? प्रत्येक नगर के समाज अध्यक्ष को तो पता होना चाहिए कि उनकी समाज की वास्तविक संख्या एवं वित्तीय स्थिति क्या है? उनके नगर में कितने परिवार सुसम्पन्न हैं, उच्च व्यवसायी हैं, उच्च शासकीय पदाधिकारी हैं । कितने परिवार दो समय के भोजन की व्यवस्था भी नहीं जुटा पा रहे हैं, बच्चों की फीस तक नहीं भर पा रहे हैं, कितने परिवारों में २६ वर्ष से अधिक आयु के अविवाहित पुत्र-पुत्रियाँ घर बैठे हैं?असमर्थ, परेशान महिलायें घरेलू काम (रोटी बनाना या अन्य कार्य) कर जीवन यापन कर रही हैं। कई सम्पन्न परिवार सहयोग करना चाहते हैं पर किसको करें उनको नही पता। श्रेष्ठि/ट्रस्टी, साधर्मी दान दे रहे हैं, किस मद में कितनी राशि प्रतिवर्ष देते हैं? जानकारी का अभाव है। यह सभी आंकड़े स्थानीय सामाजिक स्तर पर एक स्थान पर समाज के ट्रस्ट/ प्रबंधन कमेटी के पास संकलित किए जाने की आवश्यकता है !

विगत वर्षों में पूज्य मुनिश्री प्रमाण सागर जी महाराज ने समाज को जाग्रत किया था, कई स्थानों पर बहुत कुछ किया भी गया, पर आपसी सामंजस्य या लिंक के अभाव में आंकड़े सायद एकजाई नही हो पाए। मामला ठंडा पढ़ गया लगता है। हमारे यहाँ कई समाज सेवी संस्थायें सक्रिय हैं, यदि यह कार्य एक बार अपने हाथ में लेकर आगे बढ़ें तो काम कोई कठिन नही । नगर / जिला/ प्रदेश / देश में कुल जैन समाज की स्थिति सामने आ सकती है ! इसी बहाने समाज में जागृति भी फैलाई जा सकती है कि आगामी राष्ट्रीय शासकीय जनगणना मे धर्म / जाति के कॉलम में जैन जरूर लिखाना है गोत्र नहीं। इससे शासन के पास जैन समाज के आंकड़े जाने से सरकार में उचित प्रतिनिधित्व भी मिलेगा, तो दूसरी ओर अल्पसंख्यक एवं अन्य योजनाओं मे वित्तीय कोटा भी बढ़ेगा। सरकार जैन समाज की वास्तविक संख्या देखकर उचित योजनाएँ बनाएगी !

सवाल यह कि शुरुवात कौन करे? आप...जी हाँ, यह शुभ शुरुआत आप कर सकते हैं, पहली शुरुवात अपने गाँव से अपने नगर से करें। जिले के गांव/नगर की जैन समाज आपसी तालमेल से अपने जिला की जनसंख्या के आंकड़े जोड़कर जिला की जनसंख्या घोषित कर सकते हैं। आवश्यकता है त्वरित चेतना एवं जाग्रति की । उठाएं कदम, बढ़ें सामाजिक जागृति एवम् सामाजिक दायित्व की ओर।

लिखा सब भाग का होता

छलावे से भरी दुनिया, मिले मौका वहाँ छलती।
लिखा सब भाग का होता, कभी होनी नहीं टलती।
जहाँ पर भूल है खुद की, वहाँ अड़ना नहीं प्यारे,
वहाँ झुकना नहीं भाई, जहाँ तेरी नहीं गलती।

–जगबीर कौशिक

फेसबुकिया देश भक्ति

–शबनम भारतीय,

अनुज पक्का देशभक्त था। फेसबुक पर उसकी रोज देश भक्ति के भाव से पूर्ण, लबालब एक पोस्ट होती थी। हजारों लाइक और कमेंट मिलते। लोग बड़ी वाहवाही करते हैं उसकी देश भक्ति लबरेज जज्बे की। लोगों के लिए वह प्रेरणा स्रोत था । चाइनीज सामान के विरोध में वह अब्बल था। अक्सर दूसरे लोगों पर तंज भी करता रहता था । एक तरह से क्रूर देशभक्त!! एक दिन बाजार में कुछ इलेक्ट्रॉनिक सामान लेने गया । दुकानदार ने उसे कई स्वदेशी कंपनियों का सामान दिखाया। लेकिन उसे कुछ पसन्द नहीं आया, तो कुछ महंगा लगा। तब दुकानदार ने कुछ और सामान दिखाते हुए कहा- 'यह ले लीजिए, बिल्कुल सस्ता है! इंपोर्ट क्वालिटी!!' अनुज हाथ में उठाकर कई बार उलट-पुलट कर देखता और सोचता रहा। उसके दिमाग मे कई सवाल आ औऱ जा रहे थे। उथल-पुथल सी मची थी।

दुकानदार ने धीरे से कहा- 'चीज वही है, दाम एकदम कम, चाइना की बड़ी कंपनी का है।' अनुज कनखियों से इधर उधर देखते हुए बोला- 'ठीक है, यही दे दो।' दुकानदार जो कि उससे सोशल मीडिया से जुड़ा हुआ था । उसका मुंह देखता रह गया। छज्जे पर बैठे पक्षियों ने भी उसकी देशभक्ति देख सिर झुका लिया।

श्री दिगम्बर जैन महासमिति महिला एवं युवामहिला संभाग अजमेर के द्वारा नेत्रबाधित बालिकाओं का आवासीय विद्यालय लाड़ली घर की दिव्यांग बालिकाओ को सात्विक भोज

श्री दिगम्बर जैन महासमिति महिला एवं युवामहिला संभाग अजमेर के द्वारा नेत्रबाधित बालिकाओं का आवासीय विद्यालय लाड़ली घर की बीस दिव्यांग बालिकाओं को मिष्ठान्न युक्त शुद्ध एवम् सात्विक भोजन कराया गया।

समिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमती मधु पाटनी ने बताया कि लाड़लीघर आवासीय विद्यालय में २० बालिकाएं शिक्षा के साथ-साथ संस्कार ग्रहण कर रही हैं, साथ ही सभी बालिकाओं को भविष्य में अपने पैरों पर खड़े

होकर स्वरोजगार आदि की स्पेशल ट्रेनिंग दी जा रही है। बालिकाओं ने अपनी अपनी प्रतिभा दिखाकर सभी को प्रभावित किया। इस अवसर समिति परिवार से जुड़ी कुमारी आस्था जैन ने अपना जन्मदिन बहुत ही सादगी से मनाते हुए बालिकाओं को अपने हाथों से भोजन परोसा।

–मधु पाटनी, अध्यक्ष

पुस्तक समीक्षा

दवा रहित उपचार 'हस्त-मुद्रा चिकित्सा शास्त्र'

डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज' द्वारा लिखित 'हस्त-मुद्रा चिकित्सा शास्त्र' ऐसी सर्वजनोपयोगी पुस्तक है जिससे घर बैठे बिना खर्च व बिना अधिक परिश्रम किये अनेक रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है। हस्त-मुद्रा योग शरीर को स्वस्थ रखने और स्वस्थ करने के लिए बहुत ही सरल चिकित्सा पद्धति है, जिसमें व्यक्ति को केवल एकाग्र बैठकर अपने हाथों की अंगुलियों के सहयोग से विभिन्न मुद्राएं-आकार बनाना होते हैं। जिसे जो परेशानी-व्याधि हो उसके अनुकूल इस 'हस्त-मुद्रा

चिकित्सा शास्त्र' पुस्तक में निर्दिष्ट मुद्रा का अभ्यास करना चाहिए। यह अपने घर बैठे बिना किसी खर्च के अत्यंत सरल पद्धति है। इससे अनेक असाध्य रोगों में भी आराम मिलता है। इस पुस्तक में हस्त मुद्रा बनाने के लिए प्रत्येक मुद्रा के लिए आकर-चित्र दिया गया है जिसे देखकर वह मुद्रा बनाने में हमें कठिनाई नहीं होगी। मुद्रा के विवरण में मुद्रा-आकार बनाने की विधि दी गई है, कैसे और कितने समय तक करना है, कब करना है यह जानकारी तथा हस्त-मुद्रा योग करने में क्या सावधानियां वरतना हैं यह भी बताया गया है। स्वस्थ व्यक्ति को रोग न हो इस हेतु और अस्वस्थ व्यक्ति का रोग खत्म हो जाये इसलिए हस्त-मुद्रा योग करना चाहिए, अतः यह सभी व्यक्तियों के लिए उपयोगी है। इसे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रक नोशन प्रेस ने प्रकाशित किया है। 'हस्त-मुद्रा चिकित्सा शास्त्र' हिन्दी या अंग्रेजी में सर्च करके इसे घर बैठे मंगवाया जा सकता है।

डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज' अच्छे लेखक, पत्रकार, साहित्यकार, पुराविद व विद्वान् हैं। आप ६० से अधिक पुस्तकों के संपादक/लेखक/अनुवादक हैं। आपके द्वारा संपादित/प्रकाशित पुस्तकें विश्वविद्यालयों के संदर्भग्रंथों के रूप में पाठ्यक्रमों में सम्मिलित हैं। मनुज जी ने हस्त मुद्राओं पर आलेख लिखकर अखबारों में दिये तो देश-विदेश के लगभग १२३ अखबारों ने आपके आलेखों को प्रकाशित किया है, उनका भी आभार प्रकट किया गया है। इस अनूठे चिकित्सा विज्ञान हस्त-मुद्रा योग का लोगों को यथावसर लाभ मिल सके इस उद्देश्य से इसे पुस्तकाकार देकर प्रकाशित किया गया है।

समीक्षक- डॉ ममता जैन, पुणे

मगरपट्टा चैत्यालय में नव वर्ष का प्रारंभ सवा लाख महामंत्र जाप्यानुष्ठान

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी मगरपट्टा चैत्यालय में नव वर्ष का प्रारंभ सवा लाख महामंत्र जाप्यानुष्ठान से हुआ । प्रातः 8—00 से

11—00 तक यह hybrid mode (ऑनलाइन व ऑफलाइन) दोनों रूप में किया गया । किंतु 11—00 बजे के बाद यह केवल ऑनलाइन ही हुआ। जाप्यानुष्ठान का समापन शाम 7—30 बजे भक्तामर दीपार्चना के साथ किया गया सभी ने उत्साह पूर्वक नववर्ष को जिनेंद्र देव की पूजा अर्चना कर मनाया

पाठकीय अभिमत

श्री देशना पत्रिका का शुभारंभ एक सकारात्मक आगाज है। यह पत्रिका भारतीय संस्कृति की धरोहर संभालने में सहायक सिद्ध होगी, संपादकीय अति उत्तम है, पत्रिका की पूरी टीम को बहुत बहुत बधाई।

-हास्य कवि शरदेन्दु

सांस्कृतिक तरीके से नया साल मनाने की परम्परा आज के समय के नवजीवन के लिए बहुत जरूरी है। मैं इस बात से पूर्णतः सहमत हूँ।

-कवि अभिषेक

सम्पादकीय बहुत अच्छा लगा, भाषा शैली और शब्द चयन ने विषय वस्तु में चार चांद लगा दिए हैं। अन्य समस्त सामग्री भी पठनीय है। कमलेश जी का लेख ज्ञानेश कुमार मिश्र की रचना, सबका अपना रंग व आकर्षण है।

-डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'
चम्पावत

अति सुन्दर पत्रिका, धवला जी एवं महाधवला जी के प्रकाशन की अच्छी जानकारी दी गई है, अन्य सभी आलेख उत्तम हैं।

-अशोक जैन
जीवाजीराव विश्वविद्यालय, ग्वालियर

दिसंबर २०२१ के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई। सभी प्रकाशित सामग्री अत्यंत रोचक एवं हिंदी भाषा के सुंदर सृजन का अद्भुत संगम है। 'हिंदी के चलन में छाई है उदासी' इसका सटीक उदाहरण है। सभी रचनाकारों को दिल से नमन एवं अभिनंदन। आपकी पत्रिका इसी तरह समाज को सही दिशा की ओर ले जाती रहे यही उज्ज्वल कामना।

नेहा नवीन साकुरीकर,
पुणे (महाराष्ट्र)

मनोज जैन को विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) की उपाधि

डॉ. मनोज जैन आर्किटेक्ट प्लानर ने 'Sustainable Habitat based on Indian Architecture with reference to Jain Architecture & Philosophy' विषय में विद्यावाचस्पति (Ph-D.) की उपाधि प्राप्त की है। उल्लेखनीय है कि मनोज जैन सेवानिवृत्त जज डॉ० निर्मल जैन जी के सुपुत्र हैं, जैन मंदिर फिनिक्स अमेरिका का आर्किटेक्ट डॉ. मनोज जैन ने ही बनाया है, श्री देशना परिवार की ओर से शुभकामनाएं एवं बधाई

आचार्य ज्ञानसागर

कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, रघुनाथपुर

रघुनाथपुर में स्थापित सराक केन्द्र पुरुलिया रोड़ पर स्थित है, तीन मंजिला इस भवन में चैत्यालय, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र एवं सिलाई केन्द्र संचालित है। ब्र. भैया मनीष जी के निर्देशन में सराक बन्धु जैनधर्म का बेसिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। श्री कमल पाटौदी (महामंत्री) विगत २५ वर्षों से निरन्तर पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा से समस्त क्षेत्र की गतिविधियों को सुव्यवस्थित करते हैं। वर्तमान में कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र में १६० छात्र भिन्न-२ कोर्स कर रहे हैं। सिलाई सेंटर से सैकड़ों बालिकाएं सिलाई में प्रशिक्षण लेकर अपनी योग्यता से स्वावलम्बी बनी हैं/बन रही हैं । भविष्य में फैशन डिजाइनिंग आदि कोर्स चलाने की योजना है।

कम्प्यूटर केन्द्र के छात्र व प्रशिक्षक

सिलाई केन्द्र

सिलाई केन्द्र ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रमुख उपलब्धियाँ

(१) १६ औषधालय संचालित हो रहे हैं। (२) ६० धार्मिक व नैतिक पाठशालाएँ चल रही हैं। (३) बुजुर्गों एवं निराश्रित भाई-बहनों को पेंशन दी जा रही है। (४) २०१२ से रघुनाथपुर सेन्टर पर कम्प्यूटर ट्रेनिंग व सिलाई केन्द्र चल रहा है। (५) १९९४ से उपाध्याय श्री की प्रेरणा से मेरठ से 'सराकसोपान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। (६) प्रतिवर्ष आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के चातुर्मास में १०० सराक छात्रछात्राओं को आमंत्रित किया जाता है। (७) प्रतिवर्ष १०० से १५० सराक भाईयों को श्री सम्मेद शिखर की यात्रा करायी जाती है। (८) गरीब सराक बच्चों को पढ़ाई एवं बीमारी । विशेष हेतु आर्थिक सहयोग यथावत् दिया जा रहा है।

सराक क्षेत्र में विस्तृत भूभाग में हमारे लाखों बिछुड़े श्रावक बन्धु रहते हैं। सराक 'श्रावक' शब्द का ही अपभ्रंश है। बंगाल, बिहार, उड़ीसा के दूर-दराज में ग्रामों में आज ये बदहाली एवं अभावों का जीवन जी रहे हैं। समाधिस्थ आचार्य श्री ज्ञानसागर जी मुनिराज की प्रेरणा से इनके उत्थान के कार्य करने के लिए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट की स्थापना की गई। सराक ट्रस्ट द्वारा अनेक गतिविधियां संचालित की जा रहीं हैं। समाज से अनुरोध है कि अपने भाइयों को तन, मन, धन से सहयोग देकर पुण्यार्जन करें।

गजराज गंगवाल, अध्यक्ष
मो 9953001705

कमल कुमारपाटौदी, महामंत्री
मो. 8016031008

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सराक ट्रस्ट

पुरुलिया रोड, रघुनाथपुर (म.प्र.)

शुभ चिंतक फाउंडेशन ट्रस्ट (रजि.)

भारतीय कार्यालय : एच-२१०, डैफोडिल्ज, मगरपट्टा, पुणे-४११०१८ (महाराष्ट्र) फोन : ०९९७०७९०३९८

मानव-सेवा, शिक्षा-प्रचार, समाजोत्थान
एवं देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पित

उद्देश्य

- स्वास्थ्य सेवा शिविर निःशक्त जन हेतु कृत्रिम उपकरणों का वितरण
- योग एवं आयुर्वेद संबंधी जागरूकता शिविर
- गृहणियों एवं साधनहीनों का कंप्यूटर प्रशिक्षण
- विश्व की विभिन्न जातियाँ एवं देशों में जैनत्व के परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिक शोधकार्यों प्रोजेक्ट हेतु अनुदान
- प्राचीन जैन साहित्य को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद को प्रोत्साहन
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपयोगी साहित्य का प्रकाशन
- संस्कृति संरक्षण में संलग्न महिला पुरुष एवं शिक्षा प्रसार में संलग्न गुरुकुलों का सम्मान
- रिफंडेबिल ऋण-स्वरोजगार हेतु ऋण रोजगार जैन संस्थानों में
- संपूर्ण देश में जैन संतों के विहार, विश्राम एवं कार्यरत संस्थाओं को सहयोग
- प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार
- प्रतिभाशाली युवा छात्रों को प्रोत्साहन हेतु छात्रवृत्ति
- स्तरीय जर्नल्स का प्रकाशन
- नैतिक प्रशिक्षण, शाकाहार प्रसार एवं पर्यावरण संरक्षण चेतना विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाएँ एवं सेमिनार, सम्मेलन
- अन्य समाजोपयोगी सामाजिक कार्य
- जैन धर्म पर आधारित कथानकों का वृत्तचित्र निर्माण
- कामकाजी महिलाओं एवं छात्राओं हेतु उचित स्थलों पर हॉस्टल निर्माण

आप अपनी सहयोग राशि HDFC Bank A/c. 00901450000179 में जमा कर सकते हैं।

स्वामी– शुभ चिन्तक फाउण्डेशन ट्रस्ट, पुणे प्रकाशक– उपश्रेणिक जैन 210 डैफोडिल्स मगर पट्टा पुणे 411013 (महाराष्ट्र) के लिए मुद्रक–विकास आफसेट एण्ड पब्लिशर्स 45 सैक्टर .एफ औद्योगिक क्षेत्र गोविंद पुरा भोपाल. से मुद्रित। सम्पादक डॉ. नीलम जैन, पुणे, मो. 89993 99481
पत्रिका में प्रकाशित लेख समाचारादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधिक न्यायालयीन वाद का क्षेत्र पुणे होगा।